



## राष्ट्रवाद और समाजवाद: स्वामी विवेकानन्द

संतोष रजक, अतिथि व्याख्याता, इतिहास विभाग, रामजयपाल कॉलेज, छपड़ा

Received: 11/01/2018

Edited: 25/01/2018

Accepted: 06/02/2018

**सार संक्षेप:** राष्ट्र की अस्मिता, सुरक्षा एवं संप्रभुता का प्रश्न हो और हमारे अन्दर संवेदना न हो तो ऐसा जीवन व्यर्थ है। स्वामी विवेकानंद जो एक संवेदनशील व्यक्ति थे, उन्होंने देश के कोने-कोने का भ्रमण कर देश की वास्तविक स्थिति का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। स्वामी जी के अनुसार भारतवर्ष में वह प्रवाह धर्म है। इसलिए स्वामी जी देशवासियों को संबोधित करते हुए कहते हैं कि जो किया सो अच्छा है और अब और अच्छा करने का अवसर आया है। पाश्चात्य देशों का भ्रमण करते हुए स्वामी जी ने राष्ट्रवाद का जो परिचय दिया है वह सराहनीय है।

**मुख्य शब्द:** राष्ट्र, अस्मिता, सुरक्षा, संप्रभुता, स्वामी विवेकानंद।

राष्ट्र की अस्मिता, सुरक्षा एवं संप्रभुता का प्रश्न हो और हमारे अंदर संवेदना न हो तो ऐसा जीवन व्यर्थ है। स्वामी विवेकानंद जो एक संवेदनशील व्यक्ति थे, उन्होंने देश के कोने-कोने का भ्रमण कर देश की वास्तविक स्थिति का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। देश के अविकसित क्षेत्रों एवं लोगों के सूखे हुए निराशा चेहरों ने उन्हें विचलित कर दिया था। वह स्पष्ट देख रहे थे भारत माता एक विशेष जकडन में अपने भक्तों, अपने पुत्रों की ओर ताक रही थी। इस तरह स्वामी जी राष्ट्रवाद की भावना से ओत-प्रोत भारत माता की स्वतंत्रता हेतु प्रयत्नशील हुए। उनके अन्दर राष्ट्रवाद की भावना काफी बढ़ी हुई थी। इसका प्रमाण हमें उनके लेखों एवं भाषण से होता है।

प्रत्येक राष्ट्र के जीवन में एक मुख्य प्रवाह रहता है स्वामी जी के अनुसार भारतवर्ष में वह प्रवाह धर्म है। इसलिए स्वामी जी देशवासियों को संबोधित करते हुए कहते हैं कि जो किया सो अच्छा है और अब और अच्छा करने का अवसर आया है। अपनी कार्य प्रणाली का परिचय देते हुए स्वामी जी –“यह मेरी कार्य प्रणाली है हिंदुओं को यह दिखा देना कि उन्हें कुछ भी छोड़ना नहीं पड़ेगा, केवल उन्हें ऋषियों द्वारा प्रदर्शित पथ पर चलना होगा और सदियों की दास्ता के फलस्वरूप प्राप्त अपनी जड़ता को उखाड़ फेंकना होगा। हमें आगे बढ़ना ही चाहिए अपने स्वयं के भाव के अनुसार अपने स्वयं के पथ से स्वामी विवेकानंद तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप अर्थात् समय की जो आवश्यकता थी जो मांग था उसके विपरीत वह देशवासियों को धार्मिक एवं सांस्कृतिक रूप से दीक्षित करते हुए उत्साहित करते हैं और जड़ताओं से निकलने का आह्वान करते हैं। स्वामी जी की ओजस्वी वाणी ने भारतवासियों के जीवन में उथलपुथल मचा दी। निर्भीक जनजागरण ने संगठित हो राष्ट्रवाद को नयी दिशा दी। उन्होंने भविष्य के भारत

में अपना-अपना स्थान ग्रहण करने को आम जनता का आह्वान किया –“नया भारत निकल पड़े मोदी की दुकान से जड़भूजे के भाड़ के पास से, कारखाने से, हाट से, बाजार से निकल पड़े झाड़ियों, जंगलों, पहाड़ों, पर्वतों से।

स्वामी विवेकानंद निश्चित ही एक धार्मिक गुरु थे। वह हिन्दू धर्म उपदेशक थे। परंतु उनकी कार्यशैली कुछ अलग थी वह सब का साथ और सब का सम्मान चाहते थे। धर्म के संबंध में वे कहते हैं – “मैं एक ऐसा धर्म चाहता हूँ जो हममें आत्मविश्वास और राष्ट्रीय स्वाभिमान का बोध जगा दे तथा हममें दीन-दुखियां को अन्न और शिक्षा देने की तथा हमारे चारों ओर फैले समस्त दुख कष्टों को दूर करने की शक्ति भर दे। यदि ईश्वर लाभ करना चाहते हो तो पहले मनुष्य की सेवा करो।” वे कहते हैं –“भगवान को किधर ढूँढते फिर रहे हो? क्या दीन, आर्त, घृणित, अस्पृश्य ये ही तुम्हारे देवता नहीं हैं? पहले इन्हीं की पूजा क्यों नहीं करते। वेदान्त की जन्मभूमि भारतवर्ष में साधारण जनता युग-युग से उपेक्षित होती आयी है। उनका स्पर्श अशुचि है उनका संग अपवित्र है। निराशा के अंधकार में उनका जन्म होता है उसी में उनकी निरन्तर स्थिति है। याद रखो निर्धन की कुटिया में ही भारतीय राष्ट्र बसता है। स्वामी जी व्यथित होकर कहते हैं कि मैंने भारत भ्रमण किया है और सर्वत्र आम जनता का भयावह दुख-दैन्य मैंने अपनी आँखों से देखा। वह सब देखकर मैं व्याकुल हो उठा हूँ। मेरी आँखों के आँसू रोके नहीं रूकते। इसी कारण जनसाधारण की मुक्ति का कोई उपाय ढूँढ निकालने के लिए मैं अब अमेरिका जा रहा हूँ।”

पाश्चात्य देशों का भ्रमण करते हुए स्वामी जी ने राष्ट्रवाद का जो परिचय दिया है वह सराहनीय है। 11 सितम्बर 1893 के शिकागो धर्म संसद में जो विजय पताका लहरायी उससे स्वामी जी

को बड़ी ख्याति मिली और उन्हें अमरिका के विभिन्न भागों में घूमने का अवसर मिला। कार्यक्रमों के दरम्यान उनसे बड़े ही उटपटांग प्रश्न पूछे जाते स्वामी जी विचलित हुए बिना उनके प्रश्नों के उत्तर बड़े ही सहज भाव से देते। हालांकि एक भारतीय होने के नाते उन्हें एक एक प्रश्न अन्दर तक प्रताड़ित कर जाता था एक बार स्वाजी जी ने महिला संबंधी एक प्रश्न का उत्तर स्पष्ट रूप में पूछ लिया कि आपको हमारी महिलाओं की इतनी चिंता क्यों है?

राष्ट्र की दैनन्दिन जीवन का सबसे प्रमुख कारण स्वामी जी शिक्षा को मानते हैं। हम सभी जानते हैं कि हमारे लिए भारत का भविष्य शिक्षा पर निर्भर करता है। भगिनी निवेदिता यह कहते हुए आगे इसको विस्तार देते हुए कहती हैं- “हम यह भी जानते हैं कि कार्यकारी बनाने के लिए इस शिक्षा को हर स्तर पर इसके निम्नतम उपयोग से लेकर उच्चतम तथा परम उदासीन श्रेणियों तक प्रसारित करना होगा। हमें तकनीति शिक्षा चाहिए और उच्चतर शोध की भी जरूरत होगी। हमें नारियों के लिए शिक्षा की जरूरत होगी और पुरुषों के लिए भी। हमें भौतिक शिक्षा चाहिए और साथ ही साथ धार्मिक शिक्षा भी। संभवतः इन सभी से महत्वपूर्ण जन शिक्षा की जरूरत है और इसके लिए हमें स्वयं पर ही निर्भर करना होगा। स्वामी जी के प्रभाव का ही यह परिणाम है जो भगिनी निवेदिता ने ऐसे वाक्य प्रयोग किये। स्वयं विवेकानंद जी कहते हैं-“ हमें तकनीकी शिक्षा तथा उन सब चीजों की आवश्यकता है, जिनसे उद्योग-धन्धों का विकास हो, ताकि लोग नौकरी की तलाश में भटकना छोड़कर अपने लिए यथेष्ट उपार्जन कर सकें और दुर्दिन के लिए कुछ बचाकर भी रख सकें।

इतने सारे प्रमाणों से यह प्रमाणित होता है कि स्वामी जी के अन्दर राष्ट्रवाद की भावना उच्च श्रेणी की थी। उनका फार्मुला धार्मिक राष्ट्रवाद का था। तभी तो सी राजगोपालाचारी कहते हैं कि परतंत्र भारत को देखकर स्वामी जी का हृदय व्याकुल रहता था। परन्तु वह कभी भी यह नहीं चाहते थे कि स्वयं का और देशवासियों का मनोबल कम हो। इसे हमेशा वह बुलंद रखना चाहते थे, निराशा को दूर-दूर तक फटकने भी नहीं देते थे। सांस्कृतियों के ज्ञान से वह सब को गौरवान्ति करते थे। और भारत माता की उन्हें इतनी चिंता थी कि लोगों से वह उसकी सेवा को उकसाते थे। वह कहते हैं यह देखो, भारत माता धीरे-धीरे आँखे खोल रही है। वह कुछ ही देर सोयी थी। उठो, उसे जगाओ और पहले की अपेक्षा और भी गौरवमण्डित करके भक्तिभाव से उसे उसके चिरंतन सिंहासन पर प्रतिष्ठित कर दो।

आदि काल से हमारा भारतीय समाज अनेक बंधनों में जकड़ा हुआ है। ये बंधन हैं-धार्मिक (जाति, सांस्कृतिक) आर्थिक, (उच्च वर्ग, निम्न वर्ग) और राजनीतिक (सत्ता पक्ष-विपक्ष)। निश्चित ही इस बंधन, इस जकड़न को तोड़ना असंभव है। परन्तु

हमारी समस्या भी यही नहीं है हमारी वास्तविक समस्या है इस बंधन की आड़ में होने वाला खेला। भूख, भय अवसर का अभाव, आर्थिक, राजनीतिक तथा धार्मिक गैर बराबरी। और हम फंसे हैं मीट खाओ, साग खाओ, धोती-कुर्ता, पायजामा-कुर्ता, पैंट-शर्ट, लम्बे बाल-छोटे बाल, शादी-विवाह और अन्य सामाजिक सरोकारों में। जबकि हमारा सरोकार होना चाहिए शिक्षा-दीक्षा, सामाजिक समस्या आदि से। व्यक्तिवाद में उलझा भारतीय समाज को समाजवाद का दर्शन चाहिए।

समाजवाद और इसके दर्शन को स्वामी जी के शब्दों में कुछ यूँ बयान किया जा सकता है “जो सिद्धांत समाज की श्रेष्ठता की वेदी पर व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की आहुति चाहता है उसे समाजवाद कहते हैं। (हे भारत। उठो। जागो।) व्यक्ति के सदा समाज के अधिन होने के कारण और विधि नियमों द्वारा बाध्य होकर अनिश्चित आत्म-त्याग के फलस्वरूप जो परिणाम होते हैं उन सबका हमारी मातृभूमि एक जाज्वल्य उदाहरण है। इस देश में मनुष्यों का जन्म शास्त्रीय विधियों के अनुसार होता है वह जन्म भर निर्दिष्ट नियमों के अनुसार ही खान-पान किया करते हैं वैवाहिक और अन्य कार्य भी उसी तरह किये जाते हैं। और वे मरते भी हैं शास्त्रीय विधियों के अनुसार। यह अनुभव स्वामी जी ने श्री राम कृष्ण परमहंस के देहावसान व शिकांगो की यात्रा से पूर्व देश भ्रमण कर प्राप्त किया। उन्होंने पाया कि पीढ़ियों से लोग एक ही कार्य को नियमानुसार करते आ रहे हैं परन्तु इसके अतिरिक्त यह परम्परा दुर्गुणों से भरा पड़ा है।

भारतीय प्रदेशों के भ्रमण के क्रम में स्वामीजी को दीन-हीन दुखियों से साक्षात्कार हुआ। उन्होंने देश के प्रत्येक कोने में पसरे अकाल, भूख, भय, रोगग्रस्त व्यक्ति एवं विकासरहित क्षेत्रों का दर्शन किया। उनके हृदय में पीड़ा हुई। सत्य की खोज में दर-दर जाने वाले स्वामी जी को अब सत्य का सामना हो रहा था। स्वामी जी कहते हैं जब उस देवता को जिसे हम अपने चारों ओर देख पाते हैं उस विराट की पूजा नहीं कर पाते, फिर हम अन्य व्यर्थ के देवताओं के पीछे क्यों पड़े? हमारे चारों तरफ जो लोग हैं सर्वप्रथम उन विराट की पूजा करो मानव और पशु-सभी हमारे देवता हैं और सबसे पहले हमें जिन देवताओं की पूजा करनी होगी, वे हैं हमारे अपने देशवासी।” यह स्वामी जी का धार्मिक दर्शन भले ही हो, परन्तु मैं उसे समाजिक दर्शन मानता हूँ। वास्तव में हमें उनकी पूजा उनकी सेवा करनी चाहिए जो उपेक्षित हैं, सुविधा हीन हैं। स्वामी जी ने स्वयं को उनकी सेवा में लगभग और अपने शिष्यों को भी दीन-हीन की सेवा हेतु प्रशिक्षित किया। शायद यही वह महत्वपूर्ण कारण है जिसके चलते उन्होंने स्वयं को समाजवाद कहा है वे कहते हैं- "He was a socialist. He did not think socialism was perfect but he said, half a loaf

is better than no bread. (Letters of Swami Vivekananda, Advaita Ashrama, Calcutta, 1989, p. 318)

यह सत्य है कि हमारे भारतीय समाज में सब कुछ जन्म से मृत्यु तक शास्त्रीय विधियों के अनुसार होता है। स्वामी जी ने इसे अच्छा मानते हुए इसकी आलोचना में कहते हैं कि यदि केवल विधि-नियमानुसार जीवन-यापन ही उत्तमता का लक्षण हो, पीढ़ियों से आये हुए नियमों और रूढ़ियों का पालन ही सदाचार हो तो आप ही बतलाइये, वृक्ष से अधिक सदाचारी भला और कौन है, रेलगाड़ी की अपेक्षा अधिक भक्त तथा पवित्रतर साधु और कौन है? किसने पाषाण खण्ड को प्राकृतिक नियम का उल्लंघन करते देखा है। किसमें पशु को कभी पापाचार करते जाना है। (हे भारत। उठो जागो।) स्वामी जी की यह आलोचना निश्चित रूप से जागृत करता है, उन्होने निद्रा भंग करने वाला यह उदाहरण देकर यह बतलाने का प्रयास किया है कि समाज और दीन-हीन की सेवा केवल शास्त्रों अथवा धार्मिक नियमों के अनुसार ही नहीं होगा, बल्कि इससे इतर हमें इन बाधाओं को तोड़ कर कार्य करने की आवश्यकता है।

स्वामी जी ने जातिवाद का खुल कर विरोध किया, वह कहते हैं, “जाति प्रथा तो वेदान्त धर्म के विरुद्ध है। जाति एक सामाजिक रूढ़ि है और हमारे सभी महान आचार्य उसे तोड़ने का प्रयत्न करते आये हैं। जाति तो केवल भारतवर्ष की राजनीतिक संस्थाओं से निकली हुई है वह एक परम्परागत व्यावसायिक संस्था है। किसी उपदेश की अपेक्षा यूरोप के साथ व्यावसायिक स्पर्धा ने जाति बंधन को अधिक तोड़ा है। धर्म में कोई जाति नहीं होती

**संदर्भ :-**

1. अपूर्वानंद स्वामी, स्वामी विवेकानन्द संक्षिप्त जीवनी तथा उपदेश, रामकृष्ण महानगर, 1975
2. विवेकानंद स्वामी, हे भारत। उठो। जागो। रामकृष्ण मठ नागपुर ।
3. विवेकानंद स्वामीजी, हमारी शिक्षा, रामकृष्ण मठ नागपुर वर्ष- 2001
4. विवेकानंद स्वामी प्रारूप और पाश्चात्य रामकृष्ण मठ नागपुर - 2012
5. विवेकानंद स्वामी, भारत जागरण, रामकृष्ण मिशन नई दिल्ली-2011
6. विवेकानंद स्वामी, मेरा भारत अमर भारत, रामकृष्ण मठ नागपुर- 2012
7. विवेकानंद स्वामी और उनका अवदान, अद्वैत आश्रम कोलकता, 2012
8. वीरेश्वरानंद स्वामी मातृभूमि के प्रति हमारा कर्तव्य, नागपुर- 1982
9. ब्रम्हास्थानंद स्वामी, विवेकानंद राष्ट्र का आह्वान नागपुर-1970
10. विवेकानंद स्वामी, भारत का भविष्य, रामकृष्ण मठ नागपुर- 1988
11. Letters of Swami Vivekananda, Advaita Ashram Calcutta, 1989  
उपरोक्त वही, पृ0-47
12. विवेकानंद स्वामी, विवेकानंद साहित्य (खण्ड-1) अद्वैत आश्रम, कोलकता, 1963
13. विवेकानंद स्वामी, जाति, संस्कृति और समाजवाद रामकृष्ण मठ नागपुर-1953

जाति तो केवल एक सामाजिक रूढ़ि है। वास्तव में यह व्यवस्था मानव निर्मित है। प्रकृति यहाँ शून्य एवं निर्दोष है।

अपने स्वार्थ सिद्धि हेतु ऐसी व्यवस्था की गई। कर्म प्रधान इस भारतवर्ष में कर्म के अनुसार ही जाति निर्धारित होती थी, परन्तु जातिवाद ने हमारे समाज में इतना गहरा पैठ बना लिया कि अब जाति के आधार पर ही उसका कर्म तथा उसकी सामाजिक स्थिति निर्धारित होती है। इसलिए स्वामी जी के विचारधारा के आधार पर यह कहा जाता है कि "He hoped India would grow into a casteless and classless society with high spiritual ideas before it. He said, I see in my mind's eye the future perfect India rising out of this chaos and strife glorious and invisible, with Vedanta brain and Islam body."

स्वामी जी 'शुद्रा को चोटी पर देखना चाहते थे, वे रसिया (रूस) और चाईना से अलग शान्तिपूर्ण क्रान्ति के द्वारा यह चाहते थे और भारत वर्ष के उच्च वर्ग को संबोधित करते हुए वह कहते थे कि बगैर किसी हो-हल्ला के बिल्कुल ही शान्तिपूर्ण तरीके से एक दिन यह (Power) शक्ति Working people (निम्नवर्ग) के पास चली जायेगी।

**निष्कर्ष :**

इतने उच्च और महान विचारों वाले स्वामी विवेकानन्द की इस धरती (भारतवर्ष) पर यदि समाज का एक भी व्यक्ति अथवा समाज का कोई भी पक्ष विकास से अप्रकाशित होता है तो इसके लिए स्वामी जी नहीं बल्कि उनकी नीतियों एवं सिद्धांतों में विश्वास रखने वाले जिम्मेवार होंगे।